UP Board Notes Class 6 Hindi Chapter 21 नानक देव (महान व्यक्तिव)

पाठ का सारांश

नानकदेव मानवता के परम उपासक थे। बचपन से ही ये धर्म और ईश्वर सम्बन्धी बातों में रुचि लेते थे। जहाँ ये साथियों के साथ भजन-कीर्तन में मस्त रहते थे, वहीं पाठशाला में गुमसुम रहते थे। पिता इन्हें बीमार जानकर इलाज का उपाय खोजने लगे। वैद्य द्वारा नाड़ी देखने से रोग नहीं जाना जा सका, धीरे-धीरे नानकदेव के ज्ञान, सत्संग और भजन आदि गुणों की चर्चा होने लगी। नानक को व्यापार के लिए सुल्तानपुर भेजा गया। वहाँ भी कार्य के साथ-साथ, दीनों को मुफ्त भोजन कराना, साधु-संगति करना और ईश्वर भजन करना इनकी दिनचर्या में सम्मिलित था। सुलक्षणा देवी से इनका विवाह होने पर श्रीचंद और लक्ष्मीचंद दो पुत्र पैदा हुए। फिर भी नानक का मन परिवार में नहीं लगा।

पिता ने नानक की देखभाल के लिए मरदाना को भेजा। वह नानक का भक्त बन गया। नानक देश-विदेश में घूम-घूमकर ऊँच-नीच के भेद-भाव को दूर करने में प्रयासरत हो गए नानकदेव सामाजिक विषमता पसन्द नहीं करते थे। ये गरीबों को देखकर द्रवित हो उठते थे। इन्होंने अनेक देशों की यात्रा की। ये अफगानिस्तान, काबुल, अरब, तिब्बत आदि देशों में गए और इन्होंने ज्ञान का प्रकाश फैलाया। ये मानव समानता की बात करते थे। इनके अनुसार अत्याचार सहना सबसे घोर पाप है। इनकी मान्यता थी कि ईश्वर एक है और वह सृष्टि का नियंता है। आज भी मानवता के उपासक नानकदेव की ख्याति विश्व में गूंज रही है।

https://www.evidyarthi.in/